CESAR VALLEJO
सेसर वाय्येख़ो
POEMAS
कविताएँ

En la cubierta : estudio del poeta
por el artista peruano
Francisco Izquierdo Ríos

मुख पृष्ठ : पेरुवियन चित्रकार
फ्रान्सिस्को इस्कियर्दो रियोस द्वारा
कवि का स्केच ।

82

César Vallejo por Picasso

सेसर वाय्येखो पिकासो द्वारा

SELECCIONES DE ESCRITORES PERUANOS
Colección dirigida por Fernando Tola
Consejero Cultural de la Embajada del Perú
en la India

I

CESAR VALLEJO

POEMAS

Traducción y Prefacio de Premlata Verma

Introducción de Alberto Tauro
Catedrático de la Universidad
Nacional Mayor de San Marcos
de Lima (Perú)

Delhi 1969

(Sin valor comercial)

पेरू के साहित्यकारों का चयन

संग्रह डा० फेरनान्दो तोला
सांस्कृतिक सचिव भारतस्थित पेरू
दूतावास निर्देशित

I

सेसर वाय्येख़ो

कविताएँ

अनुवाद : प्रेमलता वर्मा

भूमिका : डा० अल्वेर्तो ताउरो
सान मार्कोस विश्वविद्यालय
लीमा, पेरू

दिल्ली १९६९

(बिक्री के लिए नहीं)

INDICE

Introducción ... I

Prefacio ... V

POEMAS

Los Heraldos negros (1918) :

Los heraldos negros 1
El Poeta a su amada 2
Idilio muerto 3
Líneas 4
Capitulación 5
La cena miserable 6
El tálamo eterno 7
Los dados eternos 8
Los anillos fatigados 10
Dios 11
A mi hermano Miguel 12
Los pasos lejanos 13
Espergesia 14

Trilce (1922)
"Esta noche desciendo del caballo" 16

Poemas humanos (1923—1938)
La rueda del hambriento... 18
"Hoy me gusta la vida mucho menos" ... 20
Piedra negra sobre una piedra blanca ... 22
"Acaba de pasar el que vendrá" 23

España, aparta, de mí este cáliz (1937—1938)
Himno a los voluntarios de la Republica :
"Voluntario de España, miliciano" ... 24
Los mendigos pelean por España ... 24
Masa 25
Notas (en Hindi)... 26

अनुक्रम

भूमिका I

अनुवादिका की ओर से V

कविताएँ

काल-दूत (१९१८)

काल-दूत १

कवि अपनी प्रिया के प्रति २

मृत रोमांस ३

पंक्तियाँ ४

आत्मसमर्पण ५

निरानन्द भोज ६

शाश्वत शैय्या ७

शाश्वत चौसर ८

थकी हुई अंगूठियाँ १०

ईश्वर ११

अपने भाई मीगेल के प्रति १२

दूर के कदम १३

एस्पेर्गेसिया १४

त्रील्से (१९२२)

"इस रात मैं घोड़े से उतरता हूँ" १६

मानव-कविताएं (१९२३-१९३८)

भूखे आदमी का चक्कर १८

"आज मुझे जीवन बहुत कम पसन्द आता है" २०

सफेद पत्थर के ऊपर काला पत्थर २२

"गुजर चुका है वह जो आएगा" २३

स्पेन, यह कड़ुवा जाम मेरे आगे से हटा ले जाओ (१९३७-३८)

स्पेन के रिपब्लिक वोलेन्टियरों के प्रति :

"स्पेन के वोलेन्टियर" २४

"भिखमंगे स्पेन के लिए लड़ रहे हैं" ... २४

जन समूह २५

टिप्पणी २६

भूमिका

सेसर वाय्येखो (१८९२-१९३८) ने अपने कृतित्व के माध्यम से मानवीयता का बहुत ही सच्चा और गहरा संदेश दिया है। वह स्वयं उस सम्मान के अधिकारी हैं जिसकी कामना उन्होंने ऐसे व्यक्तियों के लिए की है जो एक बार कोई काम हाथ में लेने के बाद उसे विधिवत् पूरा करके ही रहते हैं। उनका जन्म संन्तियागो दे चूको में हुआ। यह आन्देस पर्वत-प्रदेश के सीधे सादे किसानों का एक कस्बा था। स्थान का यह सम्बन्ध आगे चलकर उनके ऊर्जस्व, एकोन्मुख दृष्टिकोण को निर्णायक रूप से प्रभावित करने वाला था। यहीं पर उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की, और उसके बाद उआमा चूको के राष्ट्रीय विद्यालय में प्रविष्ट हुए। उन्होंने राजधानी लीमा के प्रसिद्ध सान मार्कोस विश्वविद्यालय में विज्ञान विषय लेकर आगे पढ़ने का निश्चय किया; और १९११ में वह वहां गए भी। पर शीघ्र ही इन पाठ्यक्रमों से उनका मन उचट गया, और वह साहित्य-अध्ययन की ओर मुड़े। कुछ छोटे-मोटे काम भी वह करते रहे, जैसे प्राइवेट ट्यूशन, और एक कृषि-फार्म के प्रबन्धकार्य में सहयोग (१९१२)। साहित्य का अध्ययन उन्होंने त्रुहीय्यो विश्वविद्यालय में आरम्भ किया। साथ ही साथ एक विद्यालय में अध्यापक रहे फिर निरीक्षक हुए; और उसी नगर के राष्ट्रीय विद्यालय में व्याकरणाचार्य के पद पर कार्य किया। त्रुहीय्यो से उन्हें 'स्पेनी काव्य में रोमानियत'' शीर्षक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने पर एम० ए० की उपाधि मिली (१९१५)। कानूनी वाक्-पटुता प्राप्त करने के लिए उन्होंने विधि-निकाय में प्रवेश किया। एक कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला; और दैनिक पत्रों में उनकी विचित्र प्रकार की पद्य-रचनाएं सामने आने लगीं; जिन पर अपनी टिप्पणियों में समकालीन कवि-बन्धुओं ने असमंजस व्यक्त किया। अपनी कानून की शिक्षा पूरी करने के लिए वह लीमा वापस लौट आये। वहां न तो उन्हें अपने आलोचकों की कृत्रिम-सूक्ष्मता सहन हुई, न साथ-साथ विधि संहिताओं के रूढ़ नियम आदि। अपनी मां की मृत्यु से बहुत व्यथित होकर उन्होंने योरोप भ्रमण का विचार बनाया। लेकिन पहले अपने परिवार वालों से मिलकर पुरानी यादें ताजा कर आना चाहते थे। सान्तियागो दे चूको में उन्होंने देखा कि एक गांव में ईर्ष्या के फलस्वरूप दंगे-फसाद हो रहे हैं; एक घर की आगजनी और लूट-पाट से जिसका अन्त हुआ। यह पहली अगस्त १९२० की बात है। षडयन्त्रों ने वाय्येखो को घटना-चक्र में फांस लिया, और दो महीने तक उन्होंने

बहुत अत्याचार सहे। उन्हें जेल में डाल दिया गया; उन पर यह अभियोग लगा कर मुकदमा चलाया गया कि वह आगजनी, मारपीट, हत्या के असफल प्रयत्न, चोरी और दंगे के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रत्यक्ष अन्याय के प्रति चारों ओर विरोध की एक लहर दौड़ गई। यद्यपि वह पूरी तरह निर्दोष करार दिए गए, पर यह अनुभव "जीवन के गम्भीरतम क्षण" के रूप में उनकी याद में बना रहा। अपने जेल के साथी अभियुक्तों की कहानियां सुन-सुन कर वह बहुत परेशान और उद्विग्न हुए और उन्होंने सान्तियागो दे चूको छोड़ दिया तथा निश्चय किया कि उन्हें 'शक्तिशाली' होना है। वह लीमा वापस आए (मार्च १९२१), और गुआदालुपे के राष्ट्रीय स्कूल में अध्यापक हो गए। लगभग उन्हीं दिनों अपनी तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं। और इसके बाद इन्होंने पेरू हमेशा के लिए छोड़ दिया (१९२३)। वह पेरिस जाकर बस गए जहां पैसे की तंगी दूर करने के लिए उन्होंने पत्रकारिता का सहारा लिया। उन्होंने फिर योरोप का भ्रमण किया—पूर्व से लेकर पश्चिम तक : रूस, जर्मनी; और उत्तर से लेकर दक्षिण तक—चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, आस्ट्रिया, इटली। लेकिन जब वह पेरिस लौट कर आये तो उन पर कम्युनिस्ट प्रचार-कार्य करने का आरोप लगाया गया और उन्हें फ्रांस से निकल जाने का आदेश हुआ। वह स्पेन गए, जहां उन्होंने राजशाही का पतन देखा। और यद्यपि लेखक वर्ग ने उनका स्वागत किया, फिर भी निष्कासन आज्ञा रद्द हो जाने पर उन्होंने पेरिस ही लौट जाना पसन्द किया (२ अक्तूबर १९३४)। वे १९३७ तक वहीं रहे। उन दिनों समूचे विश्व में फासिज़्म का आतंक फैलता जा रहा था। मानव-संस्कृति और स्वतन्त्रता को बचाने का प्रश्न था। इसी सन्दर्भ में १९३७ में अन्तर्राष्ट्रीय लेखक कांग्रेस की बैठकें यथाक्रम बार्सीलोना, बालेन्सिया, और माद्रिद में हुईं, जिनमें वाय्येख़ो ने भाग लिया। उन्होंने पेरिस में गुड-फ्राइडे की एक शाम को जब झीनी-झीनी वर्षा हो रही थी—ठीक जैसे अपनी एक कविता में उन्होंने भविष्यवाणी की थी—संसार से विदा ली।

सेसर वाय्येख़ो की कविता में बहुत गहरी मानवीयता का परिचय मिलता है, उसे किसी भी पूर्व निश्चित प्रकार के खाने में रखना सम्भव नहीं। अपने कथ्य-सन्दर्भ और रूप-प्रकार के कारण वह अनोखी और अद्वितीय है। वह एक वैशिष्ट्यपूर्ण और एकान्तिक पीड़ा को व्यक्त करती है। इस पीड़ा की जड़ें विश्व के समूचे दलित और प्रताड़ित वर्ग की असीम पीड़ाओं में है। हमारे समय की नियति से पूर्णत: जुड़ी हुई और फिर भी अपने में मुक्त। विश्वव्यापी किन्तु फिर भी पेरू की मूल प्रवृत्तियों से बंधी हुई। इसमें व्यक्तिवादी कवियों की अलंकारयुक्त सुबकियां नहीं हैं, बल्कि हृदय की गहन उद्विग्नता पर ही

इसका जोर है और उसी को वह आगे बढ़ाता है। इसी से इसमें स्वच्छता के साथ-साथ क्रूरता है, आदिम शक्ति का एहसास है एवं एकान्तिक सृजन की महानता है।

यह अपने ही ढंग की चीज है। एक तरह से कहा जा सकता है कि सेसर वाय्येखो के शब्द अपनी ही इयत्ता और ध्वनियों को पार करते हुए अपने सही रूप को पाने के लिए एक नए सांचे में ढल जाते हैं। सेसर वाय्येखो की एक कृति है—"**कालदूत**"। इसकी रचना १९१८ में हुई थी। इसमें वैसे ही क्रूर और पीड़ित विचार हैं। लेकिन इनके पीछे गरीबी से घिरा एक जाना-पहचाना ग्रामीण संसार है। जिस समय यह पुस्तक सामने आई इसमें उस समय के पेरू के कवियों के मांसलतापूर्ण सौंदर्य-बोध से कोई समझौता नहीं था, हालांकि उस समय 'कोलोनीदा' नामक एक ग्रुप इसी सौन्दर्य-बोध को लेकर चारों ओर छा रहा था। सेसर वाय्येखो के मन में इन सब के प्रति घोर अनादर था और बाइबिल का यह वाक्य "जो पकड़ सकता है उसे पकड़ने दो" उनके सामने था। अपनी नवीनता और विचित्रता के कारण इस पहले संग्रह का मर्म आरम्भ में केवल कुछ ही मित्र ग्रहण कर सके। इसके उपरान्त **'त्रिल्से'** प्रकाशित हुई। इसकी रचनाओं का जन्म अंशतः एक प्रान्तीय कारागार के उदास अन्धकार में हुआ। इनमें कवि उस अन्याय के प्रति तिरस्कार व्यक्त करता है जिसका वह स्वयं भी भुक्तभोगी रह चुका था। इनमें मां की मृत्यु पर उसके स्थायी दुःख की झांकी मिलती है। इसके बाद एक लम्बे अरसे तक उसने कोई कविता नहीं लिखी। इस काल में हम वाय्येखो को "**गद्य कविताएं**" में अनुभूति की तीव्रता, गहराई और अनुद्वेग या सन्तुलन द्वारा गीतितत्व का परिष्कार करते हुए पाते हैं। यहां तक कि वह समय आ जाता है जब छोटे निर्बल देशों पर योजना-बद्ध आक्रमण होने लगते हैं और स्पेनी गृहयुद्ध आरम्भ हो जाता है। कवि आक्रामकों के प्रति आक्रोश और पीड़ितों के लिए प्रेम और ममता से भर उठता है। थोड़े ही समय में उसकी कठोर प्रतिक्रियां "**मानव कविताएं**" (१९३८) में प्रकट होती हैं। दूसरी ओर मर्माक्रान्त प्रतिरोध का स्वर **"स्पेन, यह कडुआ जाम मेरे आगे से हटा ले जा"** में गूंज उठता है।

जीवन को वाय्येखो ने जैसा कुछ देखा और विश्लेषित किया, उसकी प्रयोगात्मक सम्भावनाएं उसको उपन्यास और नाटक में दिखाई दीं। प्रथमोक्त विधा का उदाहरण "**स्वर-ग्राम**" (१९२३) है, जिसमें उसकी त्रुखीयो प्रान्त के कारावास की स्मृतियां और छः कहानियां संग्रहीत हैं। इनमें लेखक की

गहरे मनोवैज्ञानिक स्तरों तक डूब सकने की अद्भुत क्षमता का परिचय मिलता है। **"बर्बर कथा"** (१९२३) एक आदिवासी परिवार के ईर्ष्यापूर्ण वातावरण में मौन संघर्ष की कहानी है। **"टंगस्टन"** (१९३१) में उत्खनन कम्पनियों और सरकारी अधिकारियों द्वारा सम्मिलित रूप से आदिवासियों के शोषण और उनकी यातनाओं का चित्रण है। **"स्कीरिस के अलौकिक राज्य की ओर"** में प्राचीन इन्का युग की दन्त-कथा पल्लवित की गई है। वाय्येखो के नाटक (जो अभी तक अप्रकाशित हैं) पेरू की सामाजिक समस्याओं को उभार कर रखते हैं, जैसे **"कोलाचो भाई बन्धु"** और **"मम्पार"** (थका हुआ पत्थर) में। या फिर वे सम-सामयिक युग की ऐतिहासिक घटनाओं को मंच पर लाते हैं।

इसके अतिरिक्त वाय्येखो ने **"रूस : १९३१"** (१९३१) प्रकाशित की। इसमें रूस के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित लेख संग्रहीत हैं। वाय्येखो ने तीन और निबन्ध-संग्रह प्रकाशन के लिए तैयार कर लिए थे : (१) **"रूस, दूसरी पंचवर्षीय योजना के लिए"** (प्रकाशित, १९६५) (२) **"कला और क्रान्ति"**। इसमें उन्होंने पतनोन्मुख साहित्य की कठोर आलोचना की है, और यह विश्वास व्यक्त किया है कि संसार के क्रान्तिकारी परिवर्तनों के द्वारा ही साहित्यिक कला का नवोत्थान होगा। (३) **"पेशेवरों के गुप्त रहस्य के बिरोध में"** तीसरा संग्रह है।

डा० अल्बेर्तो ताउरो
सान मार्कोस विश्वविद्यालय
लीमा, पेरू

अनुवादिका की ओर से

न सिर्फ़ पेरू बल्कि पूरे लातीनी अमेरिका के महानतम और जीवन्त तथा इस शताब्दी के भी महान कवि सेसर वाय्येख़ो की इक्कीस कविताओं का मूल स्पेनी से किया गया हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रस्तुत हो रहा है। यह पुस्तक उस शृंखला की पहली कड़ी है जिसके अन्तर्गत पेरू के कृति-साहित्य के कुछ चुने हुए अंशों से हिन्दी पाठकों का परिचय कराया जायेगा। यह एक सुखद घटना है कि शृंखला की पहली कड़ी के रूप में आत्म-पीड़ा और तीखे मृत्युबोध के जिस ट्रेजिक एवं यथार्थवादी कवि सेसर वाय्येख़ो को यहां पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है वह हिन्दी संसार के लिए अभी प्रायः अनजाना ही है।

अपने अनुवाद-क्रम में मैंने एक कवि होने के नाते जितना कुछ समझा उससे लगा कि वाय्येख़ो की कविताओं का संसार गहन पीड़ा, ग़रीबी, संत्रास, अभाव, तनहाई, यंत्रणा, मानसिक जकड़ाव और पराजय का संसार है, उसका समूचा व्यक्तित्व उदासी और निराशा की पर्तों से छाया है। अभाव की छटपटाहट कभी-कभी उसे निरीहता की सीमा तक पहुंचा देती है। उसकी हर अनुभूति पर कफ़न लिपटा हुआ है, हर भाव की परिणति कटुता से गुज़र कर क़ब्र में पहुंचती है। मौत की गूंज उसे हर वक्त सुनाई देती है। परिवार के प्रति उसका ज़बर्दस्त लगाव उसे किसी सुखद अनुभूति तक नहीं पहुंचाता; प्रेम उसके लिए कोमल नहीं, कटु अनुभूति है, तभी प्रणय-प्रसंगों में उसे कफ़न और ताबूत ज़्यादा याद आते हैं, पेरिस से उसे मोह है पर ट्रेजिक क़िस्म का, ईश्वर उसकी समस्या भी है और ज़रूरत भी, उससे उसकी अनेकों शिकायतें हैं, वह उस पर व्यंग भी करता है पर उससे लड़ने की स्थिति में वह नहीं है। सेसर वाय्येख़ो जैसे निरन्तर दुःस्वप्न में जी रहा हो।

वाय्येख़ो के दुःख और यातनाओं का स्वरूप नितान्त वैयक्तिक है। शोषितों की बात भी वह कविता में इसलिए करता है क्योंकि वह ख़ुद को शोषित महसूसता है। बाहरी सच्चाई हो, परिवार सम्बन्ध हो या प्रेमानुभूति, चाहे ईश्वर या नियति—उसके इसी व्यक्तिगत निषेध के रंग में रंगे हुए हैं, यह सभी उसकी आत्मयन्त्रणा की पुष्टि के माध्यम बन जाते हैं और इन माध्यमों से वह निरन्तर अपने दुःख और यातना का साक्षात्कार करता है। वाय्येख़ो कहीं न कहीं अपने प्रति क्रूर है तभी वह यातना से उबरने की कोशिश करने के

बजाय उसमें डूबता चला जाता है । सिवाय अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में स्पेनी गृह युद्ध के समय आत्मकेन्द्रीयता तोड़ कर जब वह उत्साह से बाहर आता है सामाजिक यथार्थ चेतना लिए हुए तब व्यक्तिगत छाया के अन्धकार और विषाद के बदले आक्रोश और संघर्ष का नाद वाय्येखो की कविताओं में पहली बार सुनाई पड़ता है, पर इसे अपवाद ही मानना चाहिए । आगे वाय्येखो क्या लिखता, यह तो चंद वर्षों बाद ही मौत के रहस्य में कहीं खो गया ।

वाय्येखो की मन:स्थिति की तुलना जंगल में बेतहाशा दौड़ते हुए उस व्यक्ति से की जा सकती है जो पानी-पानी चिल्लाता हो, यह जानते हुए भी कि भला ऐसे जंगल में पानी कहां । उसकी छटपटाहट ऐसी है जैसे समुद्र में आग लग जाने पर समुद्री जीवों में होती है।

फिर सारे निषेध रंगों के बावजूद वह कौन-सी चीज है जो वाय्येखो की दु:खात्मक अनुभूति को महान और मूल्यवान बनाती है तथा काव्य की ऊंचाई तक पहुंचाती है ? बात यह है कि वाय्येखो का दु:ख स्वानुभूत सच्चा दु:ख है, आरोपित या कल्पित नहीं, उसके विषाद और निराशा बड़े पौरुषवान हैं, विगलित नहीं । उसकी अनुभूतियां ईमानदार हैं, उनमें तीव्र वेग और गहराई की चरम सीमा है (इसीलिए अक्सर वह अपनी इमेज को दुहरा भी देता है), उसकी अभिव्यक्तियां प्रखर और सीधी हैं, उनमें पेंच या बनावट नहीं है, अनुभूतियों में ठोसपन है, मात्र शोर, आंसू या धुआं नहीं ।

अपनी ऐसी अनुभूतियों को रूप देने के लिए वाय्येखो के पास अपनी स्वयं की भाषा गढ़ने की एक आन्तरिक मजबूरी-सी थी । इसलिए वह भाषा के संग थोड़ा प्रयोग करता है, थोड़ा मनमाना व्यवहार भी कर डालता है । जहां उसे तोड़ना, मरोड़ना, जोड़ना घटाना है, उसे वह अच्छी तरह जानता है । जब अपनी अनुभूतियों के वेग में वह बहुत कस जाता है तब बहुत संक्षिप्त और विचित्र ढंग से व्यक्त शब्दों में गुंफित भाव अभिव्यक्त होते हैं— ऐसी जगह पाठक को दुरूहता का भास हो सकता है पर असर गहरा ही पड़ता है । रूपक की कल्पना को वह भंग करता चलता है रूपक बनाते बनाते । उसकी भाषा सटीक है । भले ही उसकी ऐसी भाषा शैली में अटपटापन, खुरदरापन, ठेठपन, विचित्रता हो, पर शैली को उसने नया और मजबूत ही बनाया, दुर्बल नहीं । उसकी भाषा बनावट से दूर है, क्योंकि वह अनुभूतियों की सीधी और यथार्थ चोट से पैदा हुई है ।

सबसे अहम् बात यह है कि सेसर वाय्येखो की संवेदना आधुनिक है (बावजूद निषेध रंगों के), पुरातनपंथी नहीं। उसने एक परम्परा तोड़ी थी, खट्टी रूमानियत से उसने अपने को दूर रखा। फिर उसकी कविताओं में उसी मानव-नियति की व्याख्या मिलेगी जिसे आज का मानव झेल रहा है और जिसे खुद य्वायेखो ने अपने ४६ साल के अल्प जीवनकाल में भुगता। उसकी सहानुभूति दलित वर्ग से थी धन्नासेठों से नहीं—स्वाभाविक भी था। उसके दुःख और यातना व्यक्तिगत स्रोतों से जन्मने के बावजूद भी कुछ इतने अधिक मानवीय हैं कि देश-काल की सीमा पार कर के सार्वभौम और सार्वजनीन बन जाते हैं। यही वाय्येखो की आज के पाठक के लिए प्रासंगिकता है।

अब कुछ इस अनुवाद के सम्बन्ध में।

अनुवाद करते समय मेरा यह भाव रहा कि मूल के जितना निकट रह सकूं, रहूं, लेकिन अनुवाद कार्य की अपनी सीमाएं हैं और मुझे उनका एहसास है; मगर किसी भी क्षण मैंने मूल को हिन्दी पाठक की रुचि के अनुरूप ढालने की कोशिश नहीं की है, क्योंकि अनुवादक का शायद यह ध्येय नहीं होना चाहिए कि जिस भाषा में वह अनुवाद कर रहा है, उसके गुणों तथा संस्कारों के अनुरूप मूल को ढाल दे। इसके बजाय चाहिए यह कि जिस कृतिकार की कृति का वह रूपांतर कर रहा है, उसके सब गुणों को अक्षुण्ण रखते हुए मूल के प्रति पूरी वफादारी बनाए रखे। इसी से नए भावबोध एवं सौन्दर्य-बोध पाठक तक सम्प्रेषित हो सकते हैं, वरना कृतिकार की एक दूसरी ही तस्वीर पाठक के सामने उद्घाटित होगी और इस गलत धारणा को बल मिलेगा कि यथार्थ के प्रति समूचे संसार में एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया होती है।

अन्त में मैं डा० फरनान्दो तोला की आभारी हूं जिन्होंने इस संकलन के लिए कविताओं का चयन किया तथा दिशा-निर्देश करते रहे, मूल के निकट रहने पर बल दिया तथा अनुवाद कार्य में मदद की, खास कर ठेठ पेरुवियन शब्दों को समझने में। मैं श्री शमशेर बहादुर सिंह की भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस अनुवाद को पढ़ कर अमूल्य सुझाव दिए, हिन्दी मुहावरे लाने में मदद की तथा अनेक जगह संशोधन किए।

प्रेमलता वर्मा

नई दिल्ली
न १९६९

POEMAS

कविताएं

Los Heraldos Negros

HAY golpes en la vida, tan fuertes...Yo no sé!
Golpes como del odio de Dios; como si ante ellos,
la resaca de todo lo sufrido
se empozara en el alma...Yo no sé !

Son pocos, pero son...Abren zanjas oscuras
en el rostro más fiero y en el lomo más fuerte.
Serán tal vez los potros de bárbaros atilas;
o los heraldos negros que nos manda la Muerte.

Son las caídas hondas de los Cristos del alma,
de alguna fe adorable que el Destino blasfema.
Esos golpes sangrientos son las crepitaciones
de algún pan que en la puerta del horno se nos quema.

Y el hombre...Pobre...pobre ! Vuelve los ojos, como
cuando por sobre el hombro nos llama una palmada;
vuelve los ojos locos, y todo lo vivido
se empoza, como un charco de culpa, en la mirada.

Hay golpes en la vida, tan fuertes...Yo no sé.

काल-दूत

जीवन में आघात इतने कठोर हैं······क्या कहूं ।
आघात मानो ईश्वर की घृणा, मानों उनके पहले ही
सारी यातना का पछाड़
आत्मा में भर गई हो······क्या कहूं ।

थोड़े ही सही, पर हैं······डालते हैं स्याह दरारें
बेतरह खिंचे चेहरे पर और बेहद कड़ी पीठ पर ।
वे होंगे शायद बर्बर अतीलों के जंगली घोड़े;
अथवा कालदूत जिन्हें मृत्यु हमारे पास भेजती है ।

भीषण गहराई से गिरना आत्मा के मसीहों का,
या कुछ अर्चनीय विश्वासों का कि, जिसे नियति अपमानित करती रहती ।
वे खूनी चोटें किन्हीं पकती रोटियों की चरचराहट हैं जो
चूल्हे के मुहाने पर ही हमारे लिए जल जाती हैं ।

और आदमी···बेचारा···बेचारा । मोड़ता है पीछे आंखें
मानों तब कन्धे पर पीछे से हमें बुलाती होती है कोई थपकी;
मुड़ती हैं विक्षिप्त आंखें और जिया हुआ सब
इकट्ठा है, पछतावों की तलइया जैसा, दृष्टि में ।

जीवन में आघात इतने कठोर हैं······क्या कहूं ।

El Poeta A Su Amada

AMADA, en esta noche tú te has sacrificado
sobre los dos maderos curvados de mi beso;
y tu pena me ha dicho que Jesús ha llorado,
y que hay un viernesanto más dulce que ese beso.

En esta noche rara que tanto me has mirado,
la Muerte ha estado alegre y ha cantado en su hueso.
En esta noche de setiembre se ha oficiado,
mi segunda caída y el más humano beso.

Amada, moriremos los dos juntos, muy juntos;
se irá secando a pausas nuestra excelsa amargura;
y habrán tocado a sombra nuestros labios difuntos.

Y ya no habrán reproches en tus ojos benditos;
ni volveré a ofenderte. Y en una sepultura
los dos nos dormiremos, como dos hermanitos.

कवि अपनी प्रिया के प्रति

प्रिये, इस रात तुमने अपना बलिदान कर दिया
मेरे चुम्बन के दो वर्तुल शहतीरों पर,
और तुम्हारी वेदना ने मुझसे कहा कि ईशू रोया है
और कि इस चुम्बन से पवित्र शुक्रवार अधिक मधुर है।

इस अपूर्व रात्रि में जिसमें तुमने मुझे इतना अधिक निहारा
मृत्यु सुखी हुई है और उसने गाया है अपनी हड्डियों के भीतर
इस सितम्बर की रात में
मेरे दूसरे पतन और अति-मानवीय चुम्बन का
दैवी-अनुष्ठान किया गया है।

प्रिय मरेंगे हम दोनों साथ-साथ बहुत ही साथ-साथ;
हमारी समुन्नत कटुता धीरे धीरे सूखती जायेगी
और हमारे मृत होंठ बज चुके होंगे छाया की ओर।

तब तुम्हारी शुभांशी आंखों में कोई शिकायत न होगी
और मैं तुम्हें फिर अपमानित करने नहीं लौटूंगा। फिर एक ही कब्र में
हम दोनों सो जायेंगे दो छोटे भाइयों की तरह।

Idilio Muerto

QUÉ estará haciendo esta hora mi andina y dulce Rita
de junco y capulí;
ahora que me asfixia Bizancio, y que dormita
la sangre, como flojo cognac, dentro de mí.

Dónde estarán sus manos que en actitud contrita
planchaban en las tardes blancuras por venir,
ahora, en esta lluvia que me quita
las ganas de vivir.

Qué será de su falda de franela; de sus
afanes; de su andar;
de su sabor a cañas de Mayo del lugar.

Ha de estarse a la puerta mirando algún celaje,
y al fin dirá temblando "Qué frío hay...Jesús !"
Y llorará en las tejas un pájaro salvaje.

मृत रोमांस

क्या कर रही होगी भला इस समय मेरी अन्दीनी
बेंत और कपुली की रची मधुर रीता,
अब, जबकि बिसान्सिया दम घोंटता है और
उनींदा होने लगता है मेरा रक्त, अलसाती कोन्याक्-सा, मेरे भीतर।

कहां होंगे उसके हाथ जो पश्चाताप की मुद्रा में
शामों को आने वाली सफेदियों पर लोहा फेरते थे,
आज की इस बरसात में जो छीने लेती है मुझसे
जीने की सारी इच्छाएं।

क्या हुआ होगा उसकी फ्लानेल की उस फ्राक का
उसकी उलझनों का, उसके चलने फिरने का,
उसके गांव के मई-मास के गन्ने के उसके स्वाद का।

वह दरवाजे के पास खड़ी देखती होगी किसी चमकते-भटकते
बादल की ओर
और अन्त में सिहर कर कह उठेगी—"हाय ईशू कैसी ठंड है···!"
और रो उठेगा खपरैल पर बैठा कोई जंगली पक्षी।

Lineas

CADA cinta de fuego
que, en busca del Amor,
arrojo y vibra en rosas lamentables,
me da a luz el sepelio de una víspera.
Yo no sé si el redoble en que lo busco,
será jadear de roca,
o perenne nacer de corazón.

Hay tendida hacia el fondo de los seres,
un eje ultranervioso, honda plomada.
¡La hebra del destino !
Amor desviará tal ley de vida,
hacia la voz del Hombre;
y nos dará la libertad suprema
en transubstanciación azul, virtuosa,
contra lo ciego y lo fatal.

¡Que en cada cifra lata,
reclusa en albas frágiles,
el Jesús aun mejor de otra gran Yema !

Y después...La otra línea...
Un Bautista que aguaita, aguaita, aguaita...
Y, cabalgando en intangible curva,
un pie bañado en púrpura.

पंक्तियां

आग का हर रिबन
जो प्रेम की खोज में मैं
फेंकता जाता हूं और जो सिहरता है शोकार्त गुलाबों में,
एक पूर्व दिवस के दफ़न को मेरे लिए जन्माता है ।
मैं नहीं जानता कि वह ठनकार जिसमें मैं उसे खोजता हूं
चट्टान का हांफना होगा
या हृदय का निरन्तर जन्म ।

खिंचा हुआ है प्राणियों के तल की ओर
एक बहुत नाज़ुक धुरी - गहरी पंसाल ।
नियति का धागा ।
प्रेम जीवन के ऐसे विधान का रुख मोड़ देगा
मनुष्य के स्वर की ओर;
और जो कुछ अन्धा है, जो कुछ रूढ़ है
उसके विरुद्ध हमें देगा शुद्ध नील तत्व परिवर्तन में
चरम स्वातंत्र्य ।

काश कि धड़कने लगे हर संख्या में,
जो सुकुमार उषाओं में एकान्तिक है,
किसी अन्य महान कलिका से उत्पन्न कोई और भी बेहतर ईशू !

और उसके बाद···दूसरी पंक्ति···
एक युहन्ना जो करता है इन्तज़ार इन्तज़ार इन्तज़ार···
और एक अस्पर्श्य वर्तुल मोड़ पर सवार
सुर्ख़ी में नहाया एक पांव ।

Capitulacion

ANOCHE, unos abriles granas capitularon
ante mis mayos desarmados de juventud;
los marfiles histéricos de sus besos me hallaron
muerto; y en un suspiro de amor los enjaulé.

Espiga extraña, dócil. Su ojos me asediaron
una tarde amaranto que dije un canto a sus
cantos; y anoche, en medio de los brindis, me hablaron
las dos lenguas de sus senos abrasadas de sed.

Pobre trigueña aquella; pobres sus armas; pobres
sus velas cremas que iban al tope en las salobres
espumas de un marmuerto. Vencedora y vencida,

se quedó pensativa y ojerosa y granate.
Yo me partí de aurora. Y desde aquel combate,
de noche entran dos sierpes esclavas a mi vida.

आत्मसमर्पण

कल रात कुछ अनार बैसाखों ने आत्मसमर्पण कर दिया
मेरे निरायुध यौवनरहित ज्येष्ठों के आगे;
उसके चुम्बनों के वातोन्मत्त कुन्तों ने मुझे
मृत पाया; और मैंने प्रेम के एक उच्छ्वास में उन्हें बंदी बनाया ।

गेहूं की एक बाली विचित्र, विनम्र । उसकी आंखों ने मेरा घेरा डाला
एक बैंगनी शाम को, जब मैंने एक गीत के बोल उसे बताए
उसके गीतों के जवाब में; और कल रात शराब के दौर के बीच
उसके स्तनों की प्यास से जलती दो जिह्वाओं ने मुझसे बात की ।

बेचारी सांवली वह; बेचारे उसके हथियार ; बेचारे
उसके हल्के पीले भरे हुए पाल, जो चले जा रहे थे, किसी मृत सागर के
खारे फेन में । विजयिनी और पराजिता,

आंखों के नीचे स्याह धारियां लिए, वह लाल हो सोचती रह गई ।
भोर होते ही मैं चल दिया । और उस संघर्ष के बाद से
रात को दो दास-सर्प मेरे जीवन में आया करते हैं ।

La Cena Miserable

HASTA cuándo estaremos esperando lo que
no se nos debe... Y en qué recodo estiraremos
nuestra pobre rodilla para siempre ! Hasta cuándo
la cruz que nos alienta no detendrá sus remos !

Hasta cuándo la Duda nos brindará blasones
por haber padecido !...
Ya nos hemos sentado
mucho a la mesa, con la amargura de un niño
que a media noche, llora de hambre, desvelado...

Y cuándo nos veremos con los demás, al borde
de una mañana eterna, desayunados todos !
Hasta cuándo este valle de lágrimas, a donde
yo nunca dije que me trajeran.
De codos
todo bañado en llanto, repito cabizbajo
y vencido : hasta cuándo la cena durará !

Hay alguien que ha bebido mucho, y se burla,
y acerca y aleja de nosotros, como negra cuchara
de amarga esencia humana, la tumba...
Y menos sabe
ese oscuro hasta cuándo la cena durará !

निरानन्द भोज

कब तक हम इन्तज़ार करते रहेंगे उसका
जो हमें किसी से मिलना ही नहीं······और रास्ते के
किस मोड़ में पसारेंगे हम अपने गरीब घुटने। कब तक
वह सलीब जो हमें बढ़ावा देती रहती है
रोकेगी नहीं अपनी पतवार।

कब तक संशय हमें पुरस्कृत करता रहेगा
यन्त्रणाएं भोगने के लिए······
बहुत बैठ चुके हम
मेज के किनारे एक शिशु की कड़वाहट भरे
जो आधी रात भूख से बिलख उठता, जगा हुआ।

और कब देखेंगे हम अपने को दूसरों के साथ
अनन्त सुबह के तट पर, नाश्ता कर चुकने के बाद, हम सब।
कब तक यही आंसुओं की घाटी !
जहां मैंने कभी नहीं कहा कि वे मुझे लायें।
कुहनियों के सहारे टिके
आँसुओं से पूरी तरह नहाया हुआ, दुहराता हूं सिर नीचा किए
आर पराजित : कब तक चलेगा यह भोज।

कोई है जिसने खूब चढ़ा ली है और मखौल उड़ा रहा है,
पास आता है और दूर जाता है हमसे, काले करछुल-सा
कटु मानव-सत् का, वह मकबरा······
और कम ही जानता है
वह काला, कब तक चलेगा यह भोज।

El Talamo Eterno

SOLO al dejar de ser, Amor es fuerte !
Y la tumba será una gran pupila,
en cuyo fondo supervive y llora
la angustia del amor, como en un cáliz
de dulce eternidad y negra aurora.

Y los labios se encrespan para el beso,
como algo lleno que desborda y muere;
y, en conjunción crispante,
cada boca renuncia para la otra
una vida de vida agonizante.

Y cuando pienso así, dulce es la tumba
donde todos al fin se compenetran
en un mismo fragor;
dulce es la sombra, donde todos se unen
en una cita universal de amor.

शाश्वत शय्या

केवल होना चुक जाने पर ही प्रेम दृढ़ होता है !
और मज़ार होगा आंखों की एक विशाल पुतली
जिसके गहन तल में जीवित बची है और रोती है
प्रेम की दारुण व्यथा, जैसे एक मधुपात्र में
मीठी अनन्तता और सियाह भोर ।

और होंठ लहरिया उठते हैं चुम्बन की ख़ातिर
जसे भरा हुआ कुछ जो छलक पड़ता है और फिर मर जाता है ;
और, जकड़े हुए संयोग में
हर मुख छोड़ देता है एक दूसरे के लिए
तड़प कर मरते हुए जीवन का एक जीवन ।

तो जब मैं इस तरह सोचता हूं, प्यारा हो जाता है मज़ार
जहां अन्त में सब एक-दूसरे में घुल जाते हैं
एक ही तरह के कोलाहल में ;
प्यारी है ऐसी छांह जहां सब परस्पर एकाकार हो जाते हैं
प्रेम के एक सार्वभौम मिलन में ।

Los Dados Eternos

Para MANUEL GONZALEZ PRADA,
esta emoción bravía y selecta,
una de las que, con más entusiasmo, me ha aplaudido el gran
maestro.

DIOS mío, estoy llorando el ser que vivo;
me pesa haber tomádote tu pan;
pero este pobre barro pensativo
no es costra fermentada en tu costado :
tú no tienes Marías que se van !

Dios mío, si tú hubieras sido hombre,
hoy supieras ser Dios;
pero tú, que estuviste siempre bien,
no sientes nada de tu creación.
Y el hombre sí te sufre: el Dios es él!

Hoy que en mis ojos brujos hay candelas,
como en un condenado,
Dios mío, prenderás todas tus velas,
y jugaremos con el viejo dado...
Tal vez ¡ oh jugador ! al dar la suerte
del universo todo,
surgirán las ojeras de la Muerte,
como dos ases fúnebres de lodo.

शाश्वत चौसर

मानुएल गोन्सालेस प्रादा के लिए
यह आक्रोशभरी, चुनी हुई अनुभूति
जो उस महाचार्य को अत्यन्त प्रिय थी।

मेरे ईश्वर, मैं रोता हूं अपने इस होने पर, जिसे मैं जी रहा हूं ;
मुझे पीड़ा देती है तुझसे ली हुई रोटी,
किन्तु, यह दीन सचेतन मिट्टी
सड़ाया हुआ खुरंट नहीं है तेरी बग़ल का :
तेरे पास मरियमें ही नहीं जो अलग हो जायं।

मेरे ईश्वर, अगर तू मानव हुआ होता
तो तू आज ईश्वर होना भी जानता होता ;
पर तू जो हमेशा मज़े में रहा,
अपनी सृष्टि का कुछ भी किंचित् महसूस नहीं करता।
और मानव, हाँ, वह तुझे भुगतता है : ईश्वर वही है।

आज जब मेरी जादुई आँखों में जलती हुई बत्तियाँ हैं
जैसे किसी मृत्युदंडित की आँखों में।
'मेरे ईश्वर' तू जला लेगा अपनी सारी बत्तियाँ
और हम फिर अपना वही पुराना पासा फेंकेंगे……।
जब तू, ओ जुआरी, सारी सृष्टि को दांव पे लगा कर
अपना भाग्य आजमायेगा,
तब शायद मृत्यु के आंखों की सियाह धारियां,
लोंदे के दो मातमी इक्के जैसी, प्रगट होंगी।

Dios mío, y esta noche sorda oscura,
ya no podrás jugar, porque la Tierra
es un dado roído y ya redondo
a fuerza de rodar a la aventura,
que no puede parar si no en un hueco,
en el hueco de inmensa sepultura.

लेकिन, मेरे ईश्वर, तू इस वहरी अन्धेरी रात में,
चाल चलने में असमर्थ होगा, क्योंकि पृथ्वी
निरन्तर बेमतलब लुढ़काए जाने के कारण
एक घिसा हुआ गोल पासा हो गई है,
जो किसी कब्र के विशाल गर्त में अटकने के सिवाय
कहीं नहीं रुक सकती ।

Los Anillos Fatigados

HAY ganas de volver, de amar, de no ausentarse
y hay ganas de morir, combatido por dos
aguas encontradas que jamás han de istmarse.

Hay ganas de un gran beso que amortaje a la Vida,
que acaba en el Africa de una agonía ardiente,
suicida !

Hay ganas de...no tener ganas. Señor ;
a tí yo te señalo con el dedo deicida;
hay ganas de no haber tenido corazón.

La primavera vuelve, vuelve y se irá. Y Dios,
curvado en tiempo, se repite, y pasa, pasa
a cuestas con la espina dorsal del Universo.

Cuando las sienes tocan su lúgubre tambor,
cuando me duele el sueño grabado en un puñal,
¡hay ganas de quedarse plantado en este verso !

थकी हुई अंगूठियां

आकांक्षा है लौट जाने की, प्यार करने की, अनुपस्थित न हो जाने की
और आकांक्षा है मर जाने की, अभिक्रांत हो
दो प्रतिरोधी जलों से जो कभी न पायेंगे भूडमरूमध्य ।

आकांक्षा है एक महाचुम्बन की जो जीवन को झकझना देता है,
जो खत्म होता है किसी तीखी मर्मान्तक पीड़ा के अफ्रीका में,
आत्मघाती ।

आकांक्षा है···आकांक्षा न करने की, ईश्वर !
तुम्हारी ओर मैं संकेत करता हूं देव हत्यारी उंगलियों से ;
आकांक्षा है, काश हृदय न मिला होता !

वसन्त लौट आता है, लौट आता है फिर वह चला जायेगा ।
और काल-रूप में दुहरा हुआ ईश्वर अपने को
दुहराता है, और गुजरता है गुजरता है
पीठ पर लादे हुए ब्रह्माण्ड का मेरुदण्ड ।

जब कनपटियां बजाती हैं अपनी विषादपूर्ण डफली
जब कटार में उत्कीर्ण स्वप्न मुझे उत्पीड़ित करता है
तब तबीयत होती है इसी पद में
जम कर खड़े रहने की ।

Dios

SIENTO a Dios que camina
tan en mí, con la tarde y con el mar.
Con él nos vamos juntos. Anochece.
Con él anochecemos, Orfandad...

Pero yo siento a Dios. Y hasta parece
que él me dicta no sé qué buen color.
Como un hospitalario, es bueno y triste;
mustia un dulce desdén de enamorado :
debe dolerle mucho el corazón.

Oh, Dios mío, recién a tí me llego,
hoy que amo tanto en esta tarde; hoy
que en la falsa balanza de unos senos,
mido y lloro una frágil Creación.

Y tú, cuál llorarás...tú, enamorado
de tanto enorme seno girador...
Yo te consagro Dios, porque amas tanto;
porque jamás sonríes; porque siempre
debe dolerte mucho el corazón.

ईश्वर

मैं महसूस करता हूं ईश्वर को चलता हुआ
इतना अपने भीतर, शाम और समुन्दर के साथ-साथ।
उसके साथ हम भी चले जाते हैं। रात हो आती है।
साथ हम भी रात में ढल जाते हैं। अनाथावस्था……

फिर भी मैं महसूस करता हूं ईश्वर को
यहाँ तक कि मुझे ऐसा लगता है जैसे
वह मुझे बोल कर लिखवा रहा हो न जाने कौन-सा
अच्छा-सा रंग।
एक धर्मार्थी आतिथेय की तरह वह भला और उदास है;
एक प्रेमी की मीठी उपेक्षा वह मुरझाएपन से
व्यक्त करता है:
दर्द बहुत होता होगा उसके हृदय में।

ओह मेरे ईश्वर मैं सिर्फ अभी ही पहुचता हूं तेरे पास
आज जब इतना प्यार करता हूं, इस शाम, आज
जब दो स्तनों की झूठी तुला में,
मापता हूं एक सुकुमार सृष्टि को और उस पर रोता हूं।

और, तुझे कितना रोना पड़ेगा……तू इतने विराट
चक्राकार घूमते स्तनों का प्रेमी……
मैं तेरा ईश्वर रूप में अभिषेक करता हूं, क्योंकि
तू बहुत प्यार करता है,
क्योंकि तू कभी मुस्कराता नहीं, क्योंकि हमेशा ही
दर्द बहुत होता होगा तेरे हृदय में।

A Mi Hermano Miguel

In memoriam

HERMANO, hoy estoy en el poyo de la casa,
donde nos haces una falta sin fondo !
Me acuerdo que jugábamos esta hora, y que mamá
nos acariciaba : "Pero, hijos..."

Ahora yo me escondo,
como antes, todas estas oraciones
vespertinas, y espero que tú no des conmigo.
Por la sala, el zaguán, los corredores.
Después, te ocultas tú, y yo no doy contigo.
Me acuerdo que nos hacíamos llorar,
hermano, en aquel juego.

Miguel, tú te escondiste
una noche de agosto, al alborear;
pero, en vez de ocultarte riendo, estabas triste.
Y tu gemelo corazón de esas tardes
extintas se ha aburrido de no encontrarte. Y ya
cae sombra en el alma.

Oye hermano, no tardes
en salir. Bueno ? Puede inquietarse mamá.

अपने भाई मीगेल के प्रति

दिवंगत की याद में

भइया, आज मैं घर की पत्थर की बेंच पर हूं,
जहां मुझे तुम्हारी अथाह कमी है।
मुझे याद आता है कि इस समय हम खेला करते थे
और अम्मा हमें लाड़ से सहलातीं—"देखो बच्चो"·· ···

अब मैं अपने को छिपा लेता हूं पहले की तरह
इन सारी सान्ध्य-प्रार्थनाओं के बीच
और मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे न पाते होगे
बड़े कमरे में, बरामदे में, आंगन में।
इसके बाद तुम अपने को छिपा लेते हो, और मैं तुम्हें नहीं पाता।
मुझे याद है हम एक दूसरे को रुला-रुला देते थे,
भइया, उस खेल में।

मीगेल, तुमने अपने को छिपा लिया
अगस्त की एक रात में पौ फटते ही ;
किन्तु बजाय हँसते हुए अपने को छिपाने के तुम उदास थे।
और उन बुझी हुई शामों का तुम्हारा यह जुड़वां हृदय
तुम्हें न पाकर ऊब गया है, और अभी से
छाया मेरी आत्मा में घिरने लगी है।

सुनो भइया, बाहर निकलने में देर मत करना।
अच्छा ? अम्मा परेशान हो जायेंगी।

Los Pasos Lejanos

MI padre duerme. Su semblante augusto
figura un apacible corazón ;
está ahora tan dulce...
si hay algo en él de amargo, seré yo.

Hay soledad en el hogar ; se reza ;
y no hay noticias de los hijos hoy.
Mi padre se despierta, ausculta
la huída a Egipto, el restañante adiós.
Está ahora tan cerca ;
si hay algo en él de lejos, seré yo.

Y mi madre pasea allá en los huertos,
saboreando un sabor ya sin sabor.
Está ahora tan suave,
tan ala, tan salida, tan amor.

Hay soledad en el hogar sin bulla,
sin noticias, sin verde, sin niñez.
Y si hay algo quebrado en esta tarde,
y que baja y que cruje,
son dos viejos caminos blancos, curvos.
Por ellos va mi corazón a pie.

दूर के कदम

मेरे पिता सो रहे हैं। उनका गंभीर चेहरा
शांत हृदय को व्यक्त करता है ;
इस घड़ी वह कितने मधुर हैं······
यदि उनमें कुछ कटु है तो निश्चय ही वह मैं हूं।

घर में एकान्त है ; प्रार्थना हो रही है ;
आज बच्चों के बारे में कोई खबर नहीं।
मेरे पिता सजग हो, अवलोकन कर रहे हैं
मिस्र की ओर पलायन का, और शोकभरी अलविदा का।
कितने पास हैं वो इस समय ;
यदि उनमें कुछ दूर है तो निश्चय ही वह मैं हूंगा।

और मेरी मां टहलती है उधर फलों के बगीचे में
वह किसी स्वाद का आस्वादन कर रही है जो अब बेस्वाद है।
इस समय वह कितनी कोमल-मधुर है,
कितनी पंख, कितनी मुक्तिद्वार, कितनी ममता।

एकान्त है घर में बिना शोर,
बिना समाचार, बिना हरियाली, बिना बचपन
और यदि कुछ छूटा हुआ है इस शाम को,
और जो नीचे को जाता है, और चरमराता है
वो हैं दो पुराने पथ, सफेद, झुके हुए।
उन्हीं से होकर मेरा हृदय पैदल जाता है।

Espergesia

YO nací un día
que Dios estuvo enfermo.

Todos saben que vivo,
que soy malo; y no saben
del diciembre de ese enero.
Pues yo nací un día
que Dios estuvo enfermo.

Hay un vacío
en mi aire metafísico
que nadie ha de palpar :
el claustro de un silencio
que habló a flor de fuego.

Yo nací un día
que Dios estuvo enfermo.

Hermano, escucha, escucha...
Bueno. Y que no me vaya
sin llevar diciembres,
sin dejar eneros.
Pues yo nací un día
que Dios estuvo enfermo.

एस्पर्गोसिया

मैं पैदा हुआ जिस दिन
ईश्वर बीमार था।

जानते हैं सब कि जीता हूं,
कि बुरा हूं, पर उन्हें कुछ भी नहीं मालूम
उस जनवरी के दिसम्बर की बाबत।
क्योंकि मैं पैदा हुआ जिस दिन
ईश्वर बीमार था।

एक शून्य है
मेरे आध्यात्मिक आकाश में
किसी को नहीं छूना है जिसे,
एक मौन का गलियारा
जो बोला आग की छुअन तक।

मैं पैदा हुआ जिस दिन
ईश्वर बीमार था।

सुनो भाई सुनो······
बस। मुझे जाने मत देना
दिसम्बरों को बिना लाए
जनवरियों को बिना जिए।
क्योंकि मैं पैदा हुआ जिस दिन
ईश्वर बीमार था।

Todos saben que vivo,
que mastico...Y no saben
por qué en mi verso chirrían,

oscuro sinsabor de féretro,
luyidos vientos
desenroscados de la Esfinge
preguntona del Desierto.

Todos saben...Y no saben
que la Luz es tísica,
y la Sombra gorda...
Y no saben que el Misterio sintetiza...
que él es la joroba
musical y triste que a distancia denuncia
el paso meridiano de las lindes a las Lindes.

Yo nací un día
que Dios estuvo enfermo,
grave.

जानते हैं सब कि जीता हूं
कि जबड़े चलाता हूं……नहीं जानते तो ये
कि क्यों मेरी कविता में खड़खडाती है—
ताबूत की अंधेरी उदासी—
पीली झंझाएं
जो रेगिस्तान में प्रश्न करते स्फिंग्स के
खुलते गुंजलक हैं।

सब जानते हैं……और ये नहीं जानते कि
प्रकाश क्षय-ग्रस्त है
परछाईं मोटी है……
और नहीं जानते कि रहस्य सारांश करती है……
कि वह कुबड़ी है—संगीतमयी और उदास—
जो दूर से ऐलान करती है
दोपहरवाले कदमों का सीमाओं से सीमाओं तक :

मैं पैदा हुआ जिस दिन
ईश्वर बीमार था
सख्त।

ESTA noche desciendo del caballo,
ante la puerta de la casa, donde
me despedí con el cantar del gallo.
Está cerrada y nadie responde.

El poyo en que mamá alumbró
al hermano mayor, para que ensille
lomos que había yo montado en pelo,
por rúas y por cercas, niño aldeano ;
el poyo en que dejé que se amarille al sol
mi adolorida infancia... ¿Y este duelo
que enmarca la portada ?

Dios en la paz foránea,
estornuda, cual llamando también, el bruto ;
husmea, golpeando el empedrado. Luego duda,
relincha,
orejea a viva oreja.

Ha de velar papá rezando, y quizás
pensará se me hizo tarde.
Las hermanas, canturreando sus ilusiones
sencillas, bullosas,
en la labor para la fiesta que se acerca,
y ya no falta casi nada.
Espero, espero, el corazón
un huevo en su momento, que se obstruye.

JUAN MEJIA BACA
Biblioteca

इस रात मैं घोड़े से उतरता हूं
घर के दरवाज़े के सामने जहां से
मैंने विदा ली मुर्गे की बांग के साथ।
यह बन्द है और कोई भी उत्तर नहीं देता।

पत्थर की बेंच जहां माँ ने जन्म दिया
बड़े भाई को ताकि वह घोड़ों की पीठ पर ज़ीन कस सके
जिनकी नंगी पीठों पर चढ़ कर ही मैंने सवारी की
गांव की पगडंडियों पर और बाग की चहारदीवारी
से होकर, मैं गंवई बालक ;
इस बेंच पर मैंने अपने दुखभरे बचपन को
धूप में पीला पड़ने दिया……और यह दुःख,
कि घेर लेता है घर की ड्योढ़ी को ?

विदेशी शांति में एक देवता
वह पशु छींक उठता है मानो वह भी किसी को पुकार रहा हो ;
वह सूँघता है, रौंदता हुआ कंकरीट का पथ और तब
संदेह करता है,
हिनहिनाता है,
जोर-जोर से कान हिलाता है।

पिता अवश्य प्रार्थना करते हुए जगे होंगे, और शायद
वे सोचते होंगे कि मुझे देर हो गयी है।
बहनें अपना सीधा-सादा शोरभरा स्वप्न गुनगुनाती,
काम में लगी होंगी आने वाले त्योहार के लिए,
और उसके आने में कोई देर भी नहीं।
मैं इन्तज़ार करता हूं, इन्तज़ार करता हूं, इस
समय एक अंडा, मेरा हृदय,
जो स्वयं अपनी बाधा बनता है।

La Rueda Del Hambriento

POR entre mis propios dientes salgo humeando,
dando voces, pujando,
bajándome los pantalones...
Váca mi estómago, váca mi yeyuno,
la miseria me saca por entre mis propios dientes,
cogido con un palito por el puño de la camisa.

Una piedra en que sentarme
no habrá ahora para mí ?
Aun aquella piedra en que tropieza la mujer que ha dado
a luz,
la madre del cordero, la causa, la raíz,
ésa no habrá ahora para mí ?
Siquiera aquella otra,
que ha pasado agachándose por mi alma !
Siquiera
la calcárida o la mala (humilde océano)
o la que ya no sirve ni para ser tirada contra el hombre,
ésa dádmela ahora para mí !

Siquiera la que hallaren atravesada y sola en un insulto,
ésa dádmela ahora para mí !
Siquiera la torcida y coronada, en que resuena
solamente una vez el andar de las rectas conciencias,
o, al menos, esa otra, que arrojada en digna curva,
va a caer por sí misma,
en profesión de entraña verdadera,
ésa dádmela ahora para mí !

भूखे आदमी का चक्कर

मैं निकल जाता हूं—अपने ही दांतों के बीच से धुएं फेंकता हुआ,
चिल्लाता हुआ, कांखता हुआ
पैन्ट नीचे खिसकाता हुआ……
मेरा पेट खाली है, मेरी भूख खाली है
गरीबी
कमीज की बांह से एक छोटी-सी छड़ी पर अटका मुझे उठा लेती है।
मेरे अपने ही दांतों के बीच मुझे खींच लेती है।

जहां मैं बैठ सकूं ऐसा कोई पत्थर
क्या मेरे लिए अब न होगा ?
वह पत्थर जिससे किसी शिशु को जन्म देने वाली किसी स्त्री ने
ठोकर खाई हो,
—गुप्त निदान, हेतु, मूल—
क्या वह भी अब मेरे लिए नहीं होगा ?
कम से कम वह दूसरा पत्थर
जो झुककर मेरी आत्मा के पार हुआ।
कम से कम
वह छिरदिरा या खराब पत्थर (विनम्र सागर)
या वह जो इतना भी काम का नहीं कि किसी आदमी पर फेंका
भी जा सके
वही अब मुझे दो मेरे लिए।

कम से कम वह, जो वे आड़ा-तिरछा और अकेला पाएं किसी अपमान में,
वही अब मुझे दो मेरे लिए।
कम से कम वह टेढ़ा-मेढ़ा और मुकुटधारी जिसमें केवल
एक बार उठती है विवेक के चलने की गूंज,
या कम से कम वह दूसरा जो शालीन घुमाव में फेंका गया
गिरने जाता है आप से आप,
सच्ची आंतों की घोषणा में,
वही अब मुझे दो मेरे लिए।

Un pedazo de pan, tampoco habrá ahora para mí?
Yo no más he de ser lo que siempre he de ser,
pero dadme,
una piedra en que sentarme,
pero dadme,
por favor, un pedazo de pan en que sentarme,
pero dadme,
en español
algo, en fin, de beber, de comer, de vivir, de reposarse,
y después me iré...
Hallo una extraña forma, está muy rota
y sucia mi camisa
y ya no tengo nada,
esto es horrendo.

रोटी का एक टुकड़ा भी क्या अब मेरे लिए नहीं होगा ?
अब और अधिक मुझे वह नहीं होना है जो हमेशा मुझे होना है :
लेकिन मुझे दो
कोई तो पत्थर जहां मैं बैठ सकूं।
लेकिन मुझे दो
कृपया, रोटी का कोई टुकड़ा जहां मैं बैठ सकूं
लेकिन मुझे दो
स्पानी में
आखिर तो कुछ पीने को, खाने को, जीने को, आराम करने को
और तब इसके बाद मैं चला जाऊँगा……
मैं पाता हूं एक विचित्र रूप, यह मेरी कमीज है
बहुत फटी हुई और गंदी।
और कुछ भी नहीं है मेरे पास
यह भीषण है।

HOY me gusta la vida mucho menos,
pero siempre me gusta vivir : ya lo decía.
Casi toqué la parte de mi todo y me contuve
con un tiro en la lengua detrás de mi palabra.

Hoy me palpo el mentón en retirada
y en estos momentáneos pantalones yo me digo :
Tanta vida y jamás !
Tantos años y siempre mis semanas !...
Mis padres enterrados con su piedra
y su triste estirón que no ha acabado ;
de cuerpo entero hermanos, mis hermanos,
y, en fin, mi ser parado y en chaleco.

Me gusta la vida enormemente
pero, desde luego,
con mi muerte querida y mi café
y viendo los castaños frondosos de París
y diciendo :
Es un ojo éste, aquél ; una frente ésta, aquélla...
Y repitiendo :
Tanta vida y jamás me falla la tonada !
Tantos años y siempre, siempre, siempre !

Dije chaleco, dije
todo, parte, ansia, dije casi, por no llorar.
Que es verdad que sufrí en aquel hospital que queda
al lado
y está bien y está mal haber mirado
de abajo para arriba mi organismo.

आज मुझे बहुत कम पसंद आता है जीवन
पर जीना तो हमेशा ही अच्छा लगता है—मैंने कहा ।
मैंने लगभग छू लिया था अपने सम्पूर्ण के अंश को
लेकिन अपने को रोके रखा
अपने शब्द के पीछे जीभ पर चोट मार कर ।

आज मैं थपथपाता हूं अपनी पीछे को दबती ठोढ़ी को
और ये क्षणस्थायी पैन्ट पहने हुए अपने आप से कहता हूं :
इतना जीवन, और कभी नहीं ।
इतने वर्ष, और हमेशा मेरे सप्ताह ।
मेरे माता-पिता अपने कब्र के पत्थर के नीचे
और अपने बदन के विषादपूर्ण पसराव के साथ जो अभी भी खत्म
नहीं हुआ ;
मेरे भाई, सम्पूर्ण देह से भाई ;
और अन्त में खड़ा हुआ मेरा अस्तित्व और जाकेट पहने ।

जीवन को विराट रूप से पसन्द करता हूं
किन्तु निश्चय ही
अपनी प्रिया मृत्यु और काफी के संग
पेरिस में बादाम का हराभरा पेड़ देखते हुए
और कहते हुए कि :
यह है एक आंख और वह भी ; यह है एक ललाट और वह भी······
और दुहराते हुए कि—
इतना जीवन और मेरी तान कभी नहीं भंग होती
इतने वर्ष, और हमेशा हमेशा हमेशा !

मैंने कहा जाकेट, मैंने कहा
सम्पूर्ण, अंश, दारुण पीड़ा, मैंने कह दिया लगभग ताकि न रोऊं ।
कि सचमुच मैंने भुगता है उस अस्पताल में जो बिलकुल बगल में है
और यह अच्छा है, बुरा है, कि मैंने देखी है
ऊपर से नीचे तक अपने अंगों की संघटना ।

Me gustará vivir siempre, así fuese de barriga,
porque, como iba diciendo y lo repito,
tanta vida y jamás ! Y tantos años,
y siempre, mucho siempre, siempre, siempre !

जीना मुझे हमेशा अच्छा लगेगा, पेट के बल पड़े हुए भी,
क्योंकि जैसा मैं कह रहा था और अब दुहराता हूं
इतना जीवन, और कभी-नहीं। इतने वर्ष
और हमेशा, बहुत ही हमेशा हमेशा हमेशा।

Piedra Negra Sobre Una Piedra Blanca

ME moriré en París con aguacero,
un día del cual tengo ya el recuerdo.
Me moriré en París—y no me corro—
tal vez un jueves, como es hoy, de otoño.

Jueves será, porque hoy, jueves, que proso
estos versos, los húmeros me he puesto
a la mala y, jamás como hoy, me he vuelto,
con todo mi camino, a verme solo.

César Vallejo ha muerto, le pegaban
todos sin que él les haga nada ;
le daban duro con un palo y duro

también con una soga ; son testigos
los días jueves y los huesos húmeros,
la soledad, la lluvia, los caminos...

सफेद पत्थर के ऊपर काला पत्थर

मरूँगा मैं पेरिस में वर्षा की भींसी के साथ,
एक दिन जिसकी याद है मेरे पास ।
मरूँगा पेरिस में······भागूंगा नहीं
शायद एक बृहस्पतिवार जैसे आज, पतझर का ।

बृहस्पतिवार ही होगा क्योंकि आज बृहस्पतिवार को
जिसमें यूं ही बना रहा हूं ये पद-गर्दन की हँसली को
मैंने पहन लिया है
उल्टे सीधे और, पहले कभी नहीं जैसे आज मुड़ा हूं पीछे
अपने समस्त रास्तों के साथ, अपने को अकेला देखने के लिए ।

सेसर वाय्येखो मर गया, पीटा सभों ने उसे खूब
उनका कुछ बिगाड़े बगैर ही ;
भरपूर दिए लाठी से और रस्सी से भी

भरपूर : साक्षी है
बृहस्पतिवार के दिन, गर्दन की हँसली,
तनहाई, वर्षा और सड़कें······

ACABA de pasar el que vendrá
proscrito, a sentarse en mi triple desarrollo ;
acaba de pasar criminalmente.

Acaba de sentarse más acá,
a un cuerpo de distancia de mi alma,
el que vino en un asno a enflaquecerme ;
acaba de sentarse de pie, lívido.

Acaba de darme lo que está acabado,
el calor del fuego y el pronombre inmenso
que el animal crió bajo su cola.

Acaba
de expresarme su duda sobre hipótesis lejanas
que él aleja, aún más, con la mirada.

Acaba de hacer al bien los honores que le tocan
en virtud del infame paquidermo,
por lo soñado en mí y en él matado.

Acaba de ponerme (no hay primera)
su segunda aflicción en plenos lomos
y su tercer sudor en plena lágrima.

Acaba de pasar sin haber venido.

गुजर चुका है वह जो आएगा,
निर्वासित हो कर, मेरे त्रिविध विकास में बैठने के लिए
गुज़र चुका है, अपराधी भाव से ।

बैठ चुका है और भी इधर,
मेरी आत्मा से दूर एक देह के फासले पर
वह जो चढ़ कर आया गदहे पर मुझे करने के लिए दुर्बल
वह बैठ चुका है खड़ा हुआ, पीला ।

मुझे दे चुका है वह जो कि खत्म हो गया
अग्नि का ताप और एक विशद सर्वनाम
जिसे कि पशु ने अपनी दुम के नीचे पाला-पोसा है ।

वह कर चुका
मुझसे व्यक्त अपनी शंका दूर की परिकल्पनाओं पर
जिसे अपनी दीठ से वह और भी परे हटा देता है

वह अच्छाई को जितना चाहिये सम्मान दे चुका
मोटी चमड़ी वाले जानवर के कारण,
जो मैंने स्वप्न में देखा और उसमें मारा गया, उस कारण ।

वह डाल चुका मुझ पर (पहला कोई नहीं)
अपना दूसरा मनस्ताप, ठीक मेरी पीठ के बीचोबीच
और अपना तीसरा पसीना, ठीक मेरे आंसुओं के बीचोबीच ।

वह गुजर चुका है बिना आए ही ।

Himno A Los Voluntarios De La Republica

I

VOLUNTARIO de España, miliciano
de huesos fidedignos, cuando marcha a morir tu corazón,
cuando marcha a matar con su agonía
mundial, no sé verdaderamente
qué hacer, dónde ponerme ; corro, escribo, aplaudo,
lloro, atisbo, destrozo, apagan, digo
a mi pecho que acabe, al bien, que venga
y quiero desgraciarme ;
....

V

Los mendigos pelean por España,
mendigando en París, en Roma, en Praga
y refrendando así, con mano gótica, rogante,
los pies de los Apóstoles, en Londres, en New York,
  en México.
Los pordioseros luchan suplicando infernalmente
a Dios por Santander,
la lid en que ya nadie es derrotado.
Al sufrimiento antiguo
danse, encarnízanse en llorar plomo social
al pie del individuo,
y atacan a gemidos, los mendigos,
matando con tan sólo ser mendigos.
....
¡ El poeta saluda al sufrimiento armado !

स्पेन के वालेन्टियरों के प्रति

१

स्पेन के वालेन्टियर
विश्वस्त हड्डियों वाले जनसैनिक
जब तुम्हारा हृदय मरने के लिए आगे बढ़ता है,
जब विश्वव्यापी मर्मान्तक वेदना से
मारने आगे बढ़ता है, नहीं जानता तब सचमुच
कि क्या करूं कहां अपने को रखूं; दौड़ता हूं, लिखता हूं
तालो पीटता हूं
रोता हूं, अटकल लगाता हूं, नष्ट करता हूं, वे बुझाते हैं, कहता हूं
अपने दिल से कि खत्म करो, अच्छाई से कि आओ
और चाहता हूं खुद पर कलंक लगाना।
....

५

भिखमंगे लड़ते हैं स्पेन के लिए
भीख मांगते हुए पेरिस में, रोम में, प्राग में,
भीख मांगने वाले गोथिक हाथों से
ईशू के दिव्य शिष्यों के चरणों को वैद्य प्रमाणित करते लंदन में,
न्यूयार्क में, मैक्सिको में।
भिखमंगे दैत्यों की तरह लड़ते हैं
ईश्वर से प्रार्थना करते हुए सान्तान्देर के लिए,
वह युद्ध, जहां अभी तक कोई पराजित नहीं।
वे पुरातन संत्रास को अपने को समर्पित कर देते हैं,
आक्रोशभरे वे सामाजिक छर्रों के आंसू रोते हैं
प्रत्येक व्यक्ति के आगे।
और अपनी हिचकियों से ही आक्रमण करते हैं,
अपने भिखमंगे होने मात्र से बध करते हुए।
....

कवि प्रणाम करता है सशस्त्र यंत्रणा को।

Masa

AL fin de la batalla,
y muerto el combatiente, vino hacia él un hombre
y le dijo "¡ No mueras ; te amo tanto !"
Pero el cadáver ¡ ay ! siguió muriendo.

Se le acercaron dos y repitiéronle :
"¡ No nos dejes ! ¡ Valor ! ¡ Vuelve a la vida !"
Pero el cadáver ¡ ay ! siguió muriendo.

Acudieron a él veinte, cien, mil, quinientos mil,
clamando : "¡ Tanto amor, y no poder nada contra la muerte !"
Pero el cadáver ¡ ay ! siguió muriendo.

Le rodearon millones de individuos,
con un ruego común : "¡Quédate hermano !"
Pero el cadáver ¡ ay ! siguió muriendo.

Entonces todos los hombres de la tierra
le rodearon ; les vio el cadáver triste, emocionado ;
incorporóse lentamente,
abrazó al primer hombre ; echóse a andar...

जनसमूह

युद्ध की समाप्ति पर
जब योद्धा मारा जा चुका, आया उसके पास एक प्राणी
और उससे बोला, 'मरो मत ; तुम मुझे इतने प्यारे हो।'
किन्तु वह शव आह ! मरता रहा ।

उसके निकट आए दो और जन और उससे वही बात कहने लगे :
'हमें छोड़ो मत, हिम्मत बांधो, लौट आओ जीवन में।'
किन्तु शव आह ! मरता रहा ।

उसके सम्मुख आए बीस जन, सौ, हजार, पन्द्रह हजार
पुकार कर कहते हुए, 'इतना सारा प्रेम, और मौत के विरुद्ध
कुछ भी न हो सकना।'
किन्तु वह शव आह ! मरता रहा।

लाखों व्यक्तियों ने उसे घेर लिया
एक ही, समान प्रार्थना के साथ 'बने रहो भाई।'
किन्तु वह शव आह ! मरता ही रहा।

तब पृथ्वी के समस्त जनों ने उसे घेरा चारों ओर से ;
देखा शव ने उन्हें विषाद और भावुकता से ;
उठा आहिस्ते से,
सीने से लगाया पहले आदमी को ; घूमकर चल पड़ा······

टिप्पणी

काल-दूत

अतील : एक बर्बर कबीले के अगुए जिन्होंने रोमन साम्राज्य पर हमला करके उसे लूटा था ।

गहराई से गिरना : क्रास ढोते हुए ईसा मसीह बोझ के कारण कई बार गिर पड़े थे ।

कवि अपनी प्रिया के प्रति

वर्तुल शहतीर : सलीब की ओर संकेत

पवित्र शुक्रवार : ईसा के मरने का दिन जो इसाइयों के लिए शोक का दिन है ।

मृत रोमांस

अन्दीनी : (स्पेनी अन्दीना) आन्देस पर्वत (पेरू का सबसे ऊँचा पहाड़) की वासिनी ।

कपुली : मकोइए से मिलता जुलता एक रस भरा, पीला-सुनहरा फल जो पेरू में पैदा होता है ।

बिसान्सिया : पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी जो एक समय अधःपतन, घुटन और अतिशय फैशन का पर्याय बन गया था ।

कोन्याक् : फ्राँसीसी ब्राँडी ।

पंक्तियां

युहन्ना : संत जॉन बाप्टिस्ट जिन्होंने ईसा मसीह के अवतार की पूर्व-घोषणा की थी ।

सुर्खी : स्पानी शब्द 'पुरपुरा' । रोमन राजाओं के एवं पोप के दरबार के उच्चाधिकारियों के वस्त्रों का दरबारी रंग ।

अनन्त चौसर

मारिया : मारिया माग्दालेना—ईसा की एक पुजारिन ।

ईश्वर

धर्मार्थी आतिथेय : स्पानीं शब्द 'ओस्पितलारियो'। मध्ययुगीन कैथोलिक धर्म की एक संस्था जिसमें आतिथ्य-सत्कार का बड़ा भारी महत्व था ।

दूर के कदम

मिस्र की ओर पलायन : बाइबिल के सन्दर्भ में उन यहूदियों की ओर संकेत है जो मिस्र से पलायन कर गए थे ।

एस्पर्गेसिया

स्फिंग्स : ग्रीक माइथोलोजी का वह शैतान जिसने उन सभी लोगों को नष्ट कर दिया जो उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके ।

भिखमंगे स्पेन के लिए लड़ रहे हैं

सान्तान्देर : स्पेन का एक नगर, जहाँ भयानक रूप से स्पेन का जन-युद्ध हुआ था ।

Printed at Indian Art Press, Kailash Colony, New Delhi–48 Phone : 77016.

JUAN MEJIA BACA
Biblioteca

सेसर वाय्येख़ो

(१८९५-१९३८)

सम्पूर्ण लातीनी अमरीका के महानतम मान्य पेरूवियन कवि, प्रेमलता वर्मा द्वारा पहली बार मूल स्पेनी से हिन्दी में अनूदित।